सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 18 • अंक 1 • 5 अप्रेल 2021 • मूल्य : 20 रु.

प. पू. मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. सा.

प. पू. मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म. सा.

प. पू. मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. सा.

गणि पदारोहण

6 मई 2021

पालीताणा

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 61 वें जन्म दिवस की झलकियाँ

अहमदाबाद

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

एवं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण।
अहिंसा समयं चेव एतावंत वियाणिया॥

ज्ञानी के लिए सार-तत्त्व यही है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।
अहिंसा और समता (सभी जीवों के प्रति समानता) इन्हीं को मुख्य धर्म समझे।

It is the essential characheristic of a wise man that he does not kill any living being. One should know beings are the main principles or religion.

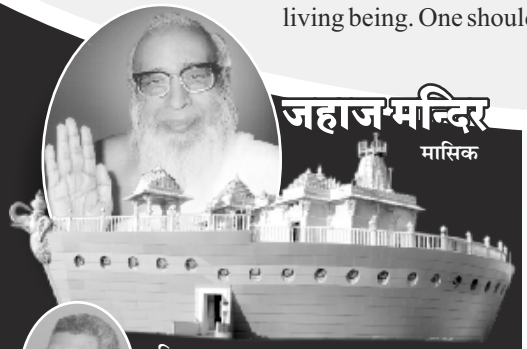

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 18 अंक : 1 5 अप्रेल 2021 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	हैदराबाद चारकमान दादावाड़ी	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	हैदराबाद (कोठी)	06
4. धर्म रक्षा करता है	मुनि समयप्रभसागरजी म.	07
5. करणिया/केनिया गोत्र का इतिहास	आचार्य जिनमणिप्रभसूरिजी म.	09
6. मुझे संयम मिले	मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म.	10
7. अधूरा सपना	डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	11
8. समस्या का समाधान	प्र. गौतम बी. संकलेचा	13
9. समाचार दर्शन	संकलित	14
10. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	26

विशेष दिवस

4 अप्रैल वर्षीतप प्रारंभ, श्री आदिनाथ जन्म एवं दीक्षा कल्याणक
8 अप्रैल चतुर्थ दादा श्री जिनचंद्रसूरि जन्मतिथि, खेतासर मेला
10 अप्रैल पाक्षिक प्रतिक्रमण
13 अप्रैल नूतन वर्ष विक्रम संवत् 2078 प्रारंभ
14 अप्रैल मीनार्क कुमुहूर्त्ता समाप्त प्रात: 2.34
15 अप्रैल श्री कुंथुनाथ केवलज्ञान कल्याणक
16 अप्रैल रोहिणी
17 अप्रैल श्री अजितनाथ-संभवनाथ-अनंतनाथ मोक्षकल्याणक, सज्झाय निक्षेप विधि
18 अप्रैल शुक्र तारा उदय
19 अप्रैल नवपद ओली प्रारंभ, अस्वाध्याय दिवस
20 अप्रैल अस्वाध्याय दिवस, पुष्य नक्षत्र प्रारंभ प्रात: 6.52
21 अप्रैल श्रीसुमतिनाथ मोक्ष कल्याणक, अस्वाध्याय दिवस, पुष्यनक्षत्र समाप्त प्रात: 7.58
23 अप्रैल श्री सुमतिनाथ केवलज्ञान कल्याणक
25 अप्रैल श्री महावीर जन्म कल्याणक, महो. समयसुन्दर जी पुण्यतिथि, अहमदाबाद
26 अप्रैल पाक्षिक प्रतिक्रमण
27 अप्रैल नवपदओली समाप्त, सिद्धाचल यात्रा, श्री पद्मप्रभस्वामी केवलज्ञान कल्याणक अस्वाध्याय दिवस, श्री कुंथुनाथ मोक्ष कल्याणक,
28 अप्रैल अप्रैल श्री शीतलनाथ मोक्ष कल्याणक, बिछुड़ो प्रारंभ 11.55, अस्वाध्याय दिवस
29 अप्रैल सज्झाय उत्क्षेप विधि
30 अप्रैल बिछुड़ो समाप्त सायं 12.07
1 मई श्री कुंथुनाथ दीक्षा कल्याणक
2 मई श्री शीतलनाथ च्यवन कल्याणक

प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना, इन दोनों में बहुत अन्तर है।

प्रसन्न रहना बहुत आसान है और प्रसन्न करना बहुत मुश्किल है।

प्रसन्न रहना बहुत मुश्किल है और प्रसन्न करना बहुत आसान है।

दोनों ही बातें अपनी-अपनी जगह सही है।

प्रसन्न रहना बहुत आसान है क्योंकि खुद को होना है और वह अपने हाथ में है।

प्रसन्न करना, यह दूसरों के संबंध में है। दूसरों को प्रसन्न करना, आसान नहीं होता। क्योंकि अपेक्षाओं की विशालता का कोई अनुभव नहीं होता।

हर व्यक्ति की अपनी अपेक्षाऐं हैं। मुश्किल यह है कि कोई भी अपेक्षा स्थिर नहीं होती। अपेक्षा का आकार निरन्तर परिवर्तित होता रहता है। ऐसी स्थिति की अपेक्षा-पूर्ति हो नहीं सकती।

और चूंकि अपेक्षा-पूर्ति ही प्रसन्नता का जब आधार होती है, तब प्रसन्न करना मुश्किल ही नहीं, असंभव हो जाता है।

इसलिये कभी भी कोई पूर्ण रूप से दूसरों को न प्रसन्न कर पाया है, न कर पायेगा।

हाँ! अपने विचारों या क्रियाओं से दूसरों को क्षणिक प्रसन्न किया जा सकता है। लेकिन वह क्षणिक प्रसन्नता स्थिति के परिवर्तित होते ही कब लम्बी अप्रसन्नता का कारण बन जायेगी, पता नहीं चलता।

मैं अपने आप में पूर्ण हूँ। मैं वही हूँ, जो सदा से हूँ।

मैं त्रैकालिक सत्य हूँ। तीनों कालों की बाह्य भूमिका या आकार प्रकार में भले अन्तर आया, पर मेरे मूल स्वरूप में कभी कोई परिवर्तन आया नहीं, आ सकता नहीं, कभी आयेगा भी नहीं।

मैं वही हूँ, जो मैं था, जो मैं हूँ और जो मैं रहूंगा। जिसे कभी भी कोई बदल नहीं सकता।

ऐसा चिंतन जिसकी प्रसन्नता का आधार होता है, उसे कोई भी व्यक्ति या परिस्थिति अप्रसन्न नहीं कर सकती।

सच तो यह है कि प्रसन्न रहना बांयें हाथ का खेल है, यदि कोई रहना जाने।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 16

राजमहेन्द्री

–मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

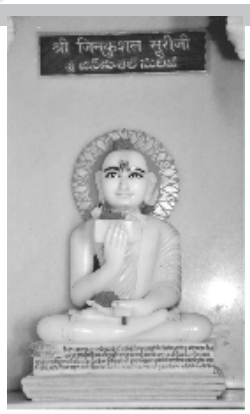

आंध्र प्रदेश के काकीनाड़ा जिला के अंतर्गत उत्तर गोदावरी नदी के तट पर राजमहेन्द्री नगर बसा है, जिसकी आबादी लगभग 5 लाख है। गाँव में मंदिरमार्गी जैन समुदाय के 370, स्थानकवासी के 5 एवं तेरापंथी के 50 घर हैं।

इस नगर में श्री वासुपूज्य स्वामी भगवान का लगभग 70 वर्ष प्राचीन मंदिर है। दादावाड़ी का अभाव होने से, दादा श्री जिनदत्तसूरि जी एवं दादा श्री जिनकुशलसूरि जी के चित्रों के माध्यम से भक्त वर्ग पूजा-अर्चना वर्षों तक करता रहा। वि.सं. 2065 में आचार्य श्री हेमेन्द्रसूरिजी म. की निश्रा में सुमतिनाथ भगवान के नूतन शिखरबद्ध अतिभव्य जिनालय की प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न हुई।

इस मंदिर के एक गोखले में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म.सा. की भामण्डलयुक्त अतिभव्य प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। गुरुदेव की उपदेशात्मक मुखमुद्रा आकर्षित करने वाली है।

छोटा नगर होते हुए भी दर्शन-पूजन वालों की पर्याप्त संख्या आती है। जैसे लगता है कि प्रभु के दरबार में मेला लगा हुआ है। यहाँ पर प्रतिदिन 700-800 भक्तगण दर्शन निमित्त व 300 भक्तगण पूजा करने आते हैं।

यहाँ आस-पास बड़े तीर्थ व भ्रमणीय स्थल भी हैं जो देखने योग्य हैं। उन्हीं में से गुममिलेरू जैन तीर्थ यहाँ से 35 कि.मी. की दूरी पर है, जहाँ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रभु जी की भूगर्भ से प्रकट 2500 वर्ष पुरानी एवं मनोहारी प्रतिमा है। यहाँ से 5 कि.मी. पर प्रसिद्ध गोदावरी डेम है। इस्कान का प्रसिद्ध हरे रामा हरे कृष्णा मंदिर 3 कि.मी. की दूरी पर है, जिसका शांत वातावरण मन को मोहित करता हुआ शांति प्रदान करता है। इसी कड़ी के अंतर्गत पेदमीरम दिगम्बर जैन तीर्थ यहाँ से 80 कि.मी. की दूरी पर है। यहाँ प्रतिष्ठित 2000 साल पुरानी श्री आदिनाथ भगवान की श्यामवर्णी पद्मासनस्थ प्रतिमा 40 वर्ष पूर्व ज़मीन खोदते वक्त प्राप्त हुई थी। प्रभु प्रतिमा की कला भक्तजनों को विशेष आकर्षित करती है।

पता :
श्री सुमतिनाथ श्री वासुपूज्य जैन श्वेताम्बर मंदिर
गुन्डुवारी स्ट्रीट, मेन रोड़, राजमहेन्द्री-533 1017, जिला ईस्ट गोदावरी (आ. प्र.)
मोबाइल :

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 17

सिकन्दराबाद (कंचर बाजार)

आंध्र प्रदेश के प्रमुख नगर को दो भागों में बांटने वाली हुसैन सागर झील के एक तरफ हैदराबाद है व दूसरी तरफ सिकन्दराबाद है। उसी सिकन्दराबाद के कंचर बाजार में स्थित जिनालय श्री कंचर बाजार जैन मंदिर नाम से प्रसिद्ध है।

कंचर बाजार में स्थित श्री आदीश्वर भगवान का उत्तरमुखी मंदिर, जो आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व प्राचीन संघ का गृह मंदिर था। यहाँ संवत् 1965 में सम्प्रतिकालीन प्राचीन प्रतिमायें स्थापित की गई थीं। इस पवित्र स्थान पर भक्तों की भावात्मक प्रक्रिया से सन् 1992 से नूतन शिखरबद्ध जिनालय का निर्माण प्रारंभ हुआ। प्रतिष्ठा वैशाख सुदि 11 तदनुसार 17 मई, 1997 को सम्पन्न हुई।

प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ प्रभु की प्रतिमा की लम्बाई 58 से.मी. एवं चौड़ाई 44 से.मी. है। बायीं ओर श्री अभिनन्दन स्वामी और दायीं ओर श्री महावीरस्वामी की प्रतिमा है।

मंदिर जी के गोखले में दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि जी और दादा श्री जिनकुशलसूरि जी के चरण युगल प्रतिष्ठित हैं। मंदिर जी में गोखले में कलाकृति युक्त, कलश युक्त, छतरी में दोनों चरण पादुकायें पश्चिममुखी प्रतिष्ठित हैं। लगभग 140 वर्ष प्राचीन दादा गुरुदेव की चरण पादुकाओं पर चांदी की आंगी चढाई गई है।

दादा गुरुदेव के चरण पादुका की लम्बाई 20 से.मी. एवं चौड़ाई 24 से.मी. है एवं दादा चरणों का शिलाखण्ड 22 से.मी. लम्बा, 24 से.मी. चौड़ा है। मूलनायक दादा गुरु श्री जिनदत्तसूरि जी के चरणों का नाप 11 से.मी. गुणा 13 से.मी. एवं दादा गुरु श्री जिनकुशलसूरि जी के चरणों का नाप 14 से.मी. गुणा 16 से.मी. है। दादा गुरुदेव की छतरी 38 इंच / 96 से.मी. चौड़ी एवं 42 इंच / 108 से.मी. ज़मीन से ऊँची स्थापित है। चार फुट ऊँचाई के बाद ऊपर मकराणा के डिजाइन पर धातु कलश स्थापित है।

छतरी में दादा गुरुदेव श्री 1008 श्री जिनदत्तसूरीश्वर जी महाराज का पाँच शिष्यों के साथ प्रवचन मुद्रा का चित्र भी लगा हुआ है। इस भव्य चित्र एवं दादा गुरु के चरण पादुका का सौम्य, मनमोहक रूप बरबस मन को भक्तिभाव की ओर खींच लेता है। मंदिर जी के बाहर बाजू में गोखलों में क्रमशः नाकोड़ा भैरव जी एवं घंटाकर्ण महावीर एवं तीन देवियाँ अम्बिका, सरस्वती और महालक्ष्मी क्रमशः विराजित हैं। इन पांच प्रतिमा जी के पिछवाड़े चांदी का सुन्दर कार्य किया गया है, जिसमें चौदह सपने एवं इन्द्र-इन्द्राणी प्रदर्शित हैं। ये प्रतिमाएँ अति सुन्दर व भावात्मक हैं। उसके आगे नीचे भोमिया जी एवं मणिभद्र जी अलग-अलग गोखले में विराजित हैं व आगे दीवार में छोटे आले में क्षेत्रपाल जी की भी प्रतिमा है।

मकराना पत्थर से निर्मित सुन्दर एवं भव्य मंदिर कंचर बाजार में अति ही कलात्मक है। नगरद्वय में श्री आदिनाथ प्रभु का यह एकमात्र रंगमंडप, तोरण द्वार, गुम्बज में खुदाई एवं खम्भों पर कलाकृति के साथ सुशोभित जिनालय है। सम्पूर्ण नगर में मात्र यहाँ पर सम्प्रतिकालीन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। रंगमंडप के स्तम्भ व तोरणों की शिल्पकला भी अनूठी है। मंदिर जी की भमती में तोरण की कारीगरी एवं बनावट अति आकर्षक है।

मंदिर का कार्यभार श्री राजस्थानी जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ संभालता है। यहाँ ठहरने के लिए मंदिर के बिल्कुल पास आराधना भवन है और आधा कि.मी. दूरी पर जैन भवन है। मंदिर तक आने के लिए नज़दीकी जुबली बस स्टैण्ड है, जो 2 कि.मी. दूर है। निकट का रेलवे स्टेशन सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन 1.5 कि.मी. दूर है। नज़दीकी हवाई अड्डा बेगमपेट, मंदिर से 2.5 कि.मी. दूर है।

पता :

श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर,

4-4-741, कंचर बाजार, जनरल बाजार, सिकन्दराबाद-500 003 (आ.प्र.), दूरभाष : 040-2789 2976

कहानी
3

धर्म रक्षा करता है

—मुनि समयप्रभसागरजी म.

(गतांक से आगे)

नागदत्त मौन है। स्वयं पर आयी हुई विपत्ति को देखकर सागारी अनशन स्वीकार किया। केवली प्ररूपित धर्म की शरण स्वीकार करके नवकार महामंत्र के जाप में स्वयं को तल्लीन किया। शासन देवी का सिंहासन कंपित हुआ। शासन देवी ने अपने ध्यान में देखा एक निर्दोष, धर्मपरायण श्रावक पर विपत्ति आ पड़ी है। शासनदेवी अपनी दिव्य शक्ति से तुरन्त वहाँ पहुँची। धर्म की महिमा जयवंता है, यह दिखाने के लिये शूली को स्वर्ण सिंहासन में बदल दिया। नागदत्त श्रेष्ठी के शरीर पर लगे हुए सारे जख्म भर गए, सारे बंधन टूट गए। नागदत्त के शरीर को दिव्य वस्त्राभूषणों से अलंकृत किया। विस्मय से सभी की आंखें फटी की फटी रह गई। शूली पर चढाने वाले जल्लाद भय से थर थर कांपने लगे। यह बात जंगल के आग की तरह सारे नगर में फैल गई। आश्चर्यकारी ऐसे दृश्य को देखने के लिये चारों तरफ से वध स्थल की ओर लोगों के टोले उमड़ पड़े। राजा भी अपने मुख्य पुरुषों के साथ उपस्थित हो गया।

तब शासन देवी ने आकाश में स्थिर होकर राजा और प्रजा सभी को सम्बोधित करते हुए कहा-यह नागदत्त निर्दोष है। शुभ भाव से धर्माराधना करने वाला पुण्यशाली मानव है। पुरुषों में उत्तम है। इसने पराये धन को न छूने का, किसी की भी गिरी वस्तु न उठाने का नियम ले रखा है। षडयन्त्र रचकर इस पर राजा के कुण्डल चुराये जाने का आरोप लगाया गया है।

प्राणान्त स्थिति होने पर भी पराये धन को ग्रहण न करने वाले इस महासत्त्वशाली पुरुष ने कभी अनीति का सहारा नहीं लिया है। शासनदेवी ने नगर रक्षक वसुदेव और श्रेष्ठी धनदत्त का नाम लेकर सत्यता जानने का कहकर अन्तर्धान हो गई।

राजा ने तुरन्त नगर रक्षक वसुदेव और श्रेष्ठी धनदत्त को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। नागदत्त को सम्मान सहित जुलूस के साथ राजदरबार ले जाया गया। हाथी पर सवार नागदत्त के पीछे जन समूह धर्म की जय जयकार के जयनाद गुंजाते हुए अपराधियों को सख्त सजा देने की प्रार्थना करने लगा। राजा ने राजमहल पहुँच कर नागदत्त को उपहार देकर सम्मानित किया। सैनिकों ने शीघ्र ही दोनों अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया।

दूसरे दिन राजदरबार आम जनता से खचाखच भर गया। सभी की उत्सुकता थी कि दोनों अपराधियों को राजा क्या सजा सुनायेंगे, पहले नगर रक्षक वसुदेव को हाजिर किया गया। वसुदेव कल के चमत्कार से अच्छी तरह से परिचित था। इसलिये तुरन्त ही उसने अपना अपराध स्वीकार करते हुए सारा घटनाक्रम जनता के सामने सुना दिया। अब श्रेष्ठी धनदत्त को बुलाया गया। कल तक अपने आपको शक्तिमान मानने वाला व धन के नशे के कारण अहंकार ग्रस्त आज सारी प्रजा के सामने सूखे पत्ते ही तरह थर-थर कांपने लगा। अपना अपराध तुरन्त स्वीकार करने में भलाई मानकर उसने नागदत्त को मारने का षड्यन्त्र रचने और अपने द्वारा सौ स्वर्ण मोहरें देने की बात को स्वीकार करते हुए पूरा-घटनाक्रम जनता को सुनाते हुए नागदत्त की सज्जनता को प्रकट किया। राजा ने जनता के सामने उन दोनों की सारी सम्पत्ति जब्त कर, अपने राज्य से निष्कासित करने का आदेश दिया। प्रजा ने राजा के निर्णय का करतल ध्वनि से स्वागत किया।

अधर्माल्लभते जन्तु-र्दुःखरोगादिसन्ततिम्।
अल्पायुस्त्वमसन्मानं, दौर्भाग्यं निःस्वतां पुनः।।

अधर्म से प्राणी दुःख, रोगादि, अल्पायुपना, अपमान, दुर्भाग्य और परायापन बार-बार प्राप्त करता है।

इस घटना का सभी के मानस पटल पर अच्छा प्रभाव

पड़ा। धर्म का साक्षात् चमत्कार देख लोगों के हृदय में धर्म के प्रति श्रद्धा दृढ़ हुई, जिनका धर्म के प्रति जुड़ाव न था वे धर्म से जुड़े।

राजा और प्रजा से सम्मानित नागदत्त धर्माराधना में तत्पर रहता हुआ अपनी प्रियतमा नागवसु के साथ संसार सुख भोगते हुए जीवन व्यतीत करने लगा।

एक बार मुनिभगवन्त अपनी चरणरज से वाराणसी को पावन करने पधारे। मुनिभगवन्त के दर्शन वन्दन का लाभ लेने नागदत्त वहाँ पहुँचा। मुनिभगवन्त ने जिनवाणी रूप अमृत का रसपान कराया। जिनवाणी के रसपान से वैराग्य मुखर हो उठा और वैराग्य को अपने आचरण में उतारने के शुभ लक्ष्य से उसने भागवती दीक्षा अंगीकार कर ली, और गुरु भगवन्तों के साथ वहाँ से विहार कर लिया।

संयम का शुद्ध भाव से पालन करते हुए स्वाध्याय आदि शुभ योगों में प्रवृत्त होते हुए अपने आत्म-भावों में रमण करने लगा। समता भाव को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने में सतत पुरुषार्थ करते-करते घाती कर्मों से मुक्त होकर केवलज्ञान प्राप्त करके केवली बन गए।

प्रणिहन्ति क्षणार्धेन साम्यमालम्ब्य कर्म तत्।
यन्न हन्यान्नरस्तीव्रतपसा जन्मकोटिभिः।।51।।

जो कर्म करोड़ों भवों में तप के द्वारा नष्ट नहीं किये जाते, वे समता के आलम्बन से एक पल में ही नष्ट हो जाते है।

नागदत्त केवली विचरण करते-करते अनेक भव्य जीवों को प्रतिबोध देते-दते सभी कर्मों का क्षय करके अक्षय सुख के भोक्ता बनने मोक्ष में पधार गए।

(क्रमशः)

मुमुक्षु रुचिका का चैन्नई में अभिनंदन व वर्षीदान

चैन्नई 21 मार्च। पूज्य खरतरगच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में पालीताना में 19 दीक्षा सम्पन्न होने जा रही है। उसमें पादरू-हैदराबाद निवासी संकलेचा परिवार की कुलदीपिका मुमुक्षु रुचिका का चैन्नई में उनके परिवार द्वारा दि. 20 मार्च को सांझी का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें मधुर संगीत के साथ श्वेता गांधी ने अपने मधुर आवाज से गीतों की प्रस्तुति दी। उनका साथ दिशा छाजेड़ व मुस्कान छाजेड़ ने दिया। उसके पश्चात श्री सिवांची मद्रास जैन संघ ने उनका अभिनंदन किया। श्री सिवांची जैन संघ के अध्यक्ष श्री जयन्तिलालजी बागरेचा व मंत्री श्री अशोकजी खतन्ग ने मुमुक्षु के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी। दूसरे दिन दि. 21 मार्च को मुमुक्षु रुचिका के दादी के घर से वर्षीदान का वरघोड़ा प्रस्थित हुआ जो जिनदत्तसूरि जैन धर्मशाला (धर्मनाथ मन्दिर) में जाकर धर्म सभा में परिवर्तित हुआ। जहां धर्मनाथ मन्दिर में पू. साध्वी मंजुलाश्रीजी म. की शिष्या ने मंगलाचरण किया। ट्रस्टी श्री मुकेशजी गोलेच्छा ने संकलेचा परिवार व मुमुक्षु का स्वागत किया व ट्रस्ट में मुमुक्षु के दादाजी श्री भवरलालजी संकलेचा, जो पूर्व में ट्रस्ट में ट्रस्टी थे। उनको भी गौरव से याद किया। आज उन्हीं की पोती मुमुक्षु का अभिनंदन हमारे ट्रस्ट में हो रहा है। पश्चात् में पूरे ट्रस्ट मंडल ने मुमुक्षु का मोमेंटो शाल से अभिनंदन किया।

गोत्र का इतिहास
30

करणिया/केनिया गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

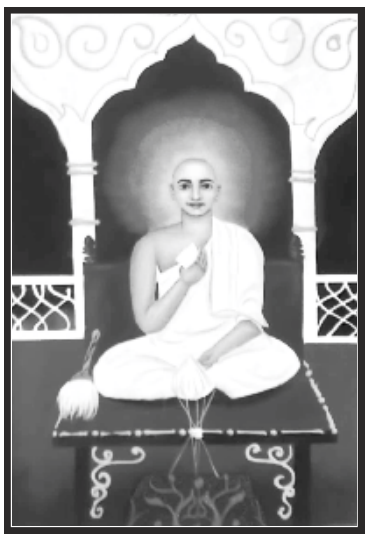

इस गोत्र की स्थापना परमार वंश से हुई है। विक्रम संवत् 1175 की यह घटना है। उस समय परमार वंश में श्री गदाधर नामक एक पराक्रमी राजा हुए। प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि के उसके नगर में पधारने पर गदाधर राजा पूज्यश्री के सानिध्य को प्राप्त करने लगा। प्रवचन श्रवण कर अपने आपको धन्य मानने लगा। अपने हृदय की समस्त शंकाओं का समाधान प्राप्त कर उसने दादा गुरुदेव से सम्यक्त्व स्वीकार करके वह जैन धर्म का अनुयायी बन गया। यह घटना विक्रम संवत् 1200 में घटी। चूंकि राजा का नाम गदाधर था। अत: उनके वंशज गदा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

गदा गोत्र कालान्तर में गादवाना के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ।

इस गोत्र के कुटुम्बीजन कुछ वर्षों के बाद सिंध व पारकर क्षेत्र को छोडकर अन्य ओसवाल बन्धुओं के साथ कच्छ के कंथकोट नगर में आये। इस गोत्र में वहाँ बजपार शाह नामक सुप्रसिद्ध श्रावक हुए। इनके सुपुत्र कुरपार शाह ने कंथकोट से श्री सिद्धाचल का छह री पालित संघ का आयोजन किया। पालीताना गिरिराज पर श्री पार्श्वनाथ भगवान का शिखरबद्ध जिनमंदिर का निर्माण करवाकर उसकी प्रतिष्ठा करवाई व शिखर पर स्वर्ण कलश चढ़ाया। वहाँ से कंथकोट आकर खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनदेवसूरि का बडा महोत्सव किया।

उस समय गुरुदेव ने वासचूर्ण डालकर कहा- तुम अनूठे काम करने वाले हो। मारवाडी भाषा में 'तुम काम करणीया हो'। इस वचन से गदा गोत्र से करणीया गोत्र प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ। यही करणीया आगे जाकर केनिया या केन्या गोत्र के नाम से ख्यात हुआ।

इस वंश में कुरपार, दीयो, केलण, सींवरा आदि कई प्रसिद्ध व्यक्तित्व हुए हैं। कच्छ में इस गोत्र के काफी श्रेष्ठिजन निवास करते हैं जो मूलत: दादा जिनदत्तसूरि द्वारा प्रतिबोधित हैं।

आओं सीखें...

卐 जिस शरीर को लोग सुन्दर समझते हैं। मौत के बाद वही शरीर सुन्दर क्यों नहीं लगता? उसे घर में न रखकर जला क्यों दिया जाता है?

जिस शरीर को सुन्दर मानते हैं। जरा उसकी चमड़ी तो उतार कर देखो। तब हकीकत दिखेगी कि भीतर क्या है? भीतर तो बस रक्त, रोग, मल और कचरा भरा पड़ा है!

फिर यह शरीर सुन्दर कैसे हुआ?

शरीर में कोई सुन्दरता नहीं है! सुन्दर होते हैं व्यक्ति के कर्म, उसके विचार, उसकी वाणी, उसका व्यवहार, उसके संस्कार, और उसका चरित्र!

जिसके जीवन में यह सब है। वही इंसान दुनियां का सबसे सुंदर शख्स है!

गीत
गाता चल
4

मुझे संयम मिले

रचयिता– मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म.

Scan me Now
for Song

वैरागी हूँ मैं, तुझ रागी हूँ मैं, मन संयम में ही रमा है,
तूं ही मेरा जहां, छोड जाऊँ कहाँ, तेरे चरणों में सारा जहां है,
अर्पण करूँ, मैं समर्पण करूँ, मेरा जीवन तेरे ही शरण...
संयम-3, संयम-3, संयम संयम मुझे संयम मिले,
संयम रे... संयम रे...
तेरी पूजा से ही ये जीवन है पाया,
तूं ही मेरी खुशियाँ श्री जिनराया
भावों से तुझको बधाऊँ, फूलों की आंगी सजाऊँ
नहलाऊँ तुझे भाव से, तेरी पूजा करूँ प्यार से
भक्ति में, तेरी मैं, झूमूँ मैं नाचूँ ओ दादा... संयम...
हर पल तूं, अन्तर में, रहने का कर देना वादा...
अर्पण करूँ, मैं समर्पण... (1)
भावों का ये झरणा तूं यूं ही बहाना... संयम
तेरे पास में दादा तूं जल्दी बुलाना
सिंह के जैसे चला हूँ, राजा मैं मेरा बना हूँ
गुरु आज्ञा में लीन बनूँ, गुरु वचनों का ध्यान धरूँ
ये नाता, जो जोडा है पूरा ही करके दिखाना
मैं लायक हूँ तेरे तो जल्दी तूं मुझमें समाना... संयम
अर्पण करूँ, मैं समर्पण... (2)

संयम जीवन सार है, बाकी सब बेकार है,
करते हम वंदन उनको जो छोड चले संसार है,
संयम ही मेरा तारक है संयम मेरा प्राण है,
संयम ही मेरा पालक है संयम मेरा मान है,
संयम से जीवन में खुशियाँ संयम स्वाभिमान है,
संयम सबसे ऊँचा जग में संयम सबसे महान है,
गुरु के हाथों संयम लेकर मुक्तिपुरी को जाना है,
गुरु के चरणों में रहकर के प्रभु में ही रम जाना है।
हे वैरागी हो अभिनंदन, चरणों में तेरे वंदन...

केएमपी सेतरावा का गठन

सेतरावा 1अप्रेल। सेतरावा में पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. की प्रेरणा एवं निश्रा में खरतरगच्छ महिला परिषद की नयी शाखा का गठन किया गया। जिसमें सभी को जिनशासन के कार्य करने की प्रेरणा दी गई। कार्यकारिणी में अध्यक्षा श्रीमती संगीताजी लोढा, उपाध्यक्षा श्रीमती डिंपलजी लोढा, सचिव श्रीमती शोभाजी लोढा, सदस्य श्रीमती सोनीदेवी लोढा, सपना देवी लोढा, गवराजी नवलखा, श्रीमती रूपाजी लोढा, श्रीमती ललिताजी लोढा, श्रीमती पुष्पाजी लोढा, श्रीमती संगीताजी लोढा, श्रीमती किरणजी लोढा को बनाया गया।

सभी को हार्दिक बधाई। और उज्ज्वल कार्यकाल की शुभकामना।

धारावाहिक
कथा
19

अधूरा सपना

(गतांक से आगे)

पुष्पचूल ने युवरानी और बहिन को कहा- तुम भावनाओं के आवेश में गलत निर्णय कर रही हो। तुम उस व्यक्ति के पीछे स्वयं को झोंक रही हो, जिसका अपना कोई भविष्य नहीं है। अगर मैं कोई उद्देश्यपूर्ण राह का राही होता तो तुम्हें मेरे साथ चलने में गौरव होता और मैं भी तुम्हारा सामीप्य पाकर संबल का अनुभव करता पर अब बात कुछ अलग है।

राजकुमारी ही बोली- आज आप निरुद्देश्य हैं पर उद्देश्य बनाने में वक्त तो नहीं लगता। आप यही समझ लें कि अभी तक राज्य अथवा अपनी इच्छापूर्ति आपका उद्देश्य था, आज से हमारा पालन-पोषण आपका उद्देश्य है। कम से कम हमें देखकर हर वक्त आप अपने उद्देश्य के प्रति जागरुक तो रहेंगे... कहते-कहते सुंदरी के होठों पर एक अर्थपूर्ण मुस्कान आ गयी।

युवराज दोनों के इस अकल्पित निर्णय से जितना अचंभित था, उससे अधिक तनावग्रस्त था। जिसे सूर्य भी नहीं देखता था, उन अत्यंत नाजुक राजघराने की नवयौवनाओं को भटकने के लिये ले जाने की कल्पना भी उसके हृदय में सिहरन पैदा कर रही थी। कहीं हिंसक पशुओं से भरे जंगल में रात्रि विश्राम करना होगा तो कहीं खतरनाक चोर डाकुओं से घिरे अरण्य में भूखे प्यासे समय निकालने की मजबूरी होगी। आज तक उसने जिम्मेदारी शब्द को सदा नकारा था पर आज इन दोनों की जिम्मेदारी की कल्पना मात्र से घबराहट हो रही थी।

वह अपने लिये हर कष्ट के लिये तैयार हो सकता था परंतु अपने अपराध की सजा वह अपनी पत्नी और बहिन को कैसे दे सकता था!

परंतु वह क्या करे? ऐसा नहीं था कि पत्नी और बहिन को माता-पिता ने नहीं समझाया होगा? वे स्वयं भी तो अपना भविष्य समझ सकती हैं। फिर क्यों उस जैसे समाज, परिवार एवं स्वयं अपने अपराधी का साथ देकर वे खुद के साथ अत्याचार कर रही हैं? क्या माताजी-पिताजी इतना बड़ा सदमा यकायक सहन करने में सक्षम हो सकेंगे? आज वह कितने बड़े दोराहे पर खड़ा है! उसके जीवन में इतना खतरनाक मोड भी आ सकता है, ऐसा तो उसने सोचा भी नहीं था।

कल जब उसे युवराज पद से हटाकर राज्य से निष्कासन की सजा दी थी तब भी उसे इतना बड़ा आघात नहीं लगा था। यह तो आखिर कभी न कभी होना ही था। कभी न कभी तो उसका अपराध पकड़ा जाना था और तब उसे न्यायप्रिय पिता द्वारा सजा मिलना भी तय था पर उसके साथ उसकी पत्नी और बहिन भी निर्दोष होकर कष्ट पायेगी, यह तो उसने सोचा भी न था। सोचते-सोचते दिमाग सुन्न होने लगा।

बहिन युवराज के चेहरे के हावभाव देखकर घबरा गयी। उसने निकट आकर युवराज के कंधे पर हाथ रखकर कहा- भैया! आप तनावमुक्त बने। हम आपका आलंबन बनेगी। जिस स्थिति में रहना होगा, उसमें प्रसन्नता से रह लेगी पर आपके बिना रहने की कल्पना भी नहीं कर सकती।

युवराज को आखिर उनकी बात माननी पड़ी। उसने फीकी हँसी हँसते हुए कहा- चलो महलों का आनंद पिताश्री के सान्निध्य में खूब लिया, अब इस अपराधी का साथ देकर जंगलों की भयानकता का अनुभव भी कर लो।

भावशून्य चेहरे से इधर-उधर देख रहे अपने पिताश्री के चरणों में प्रणाम करके युवराज इतना ही बोला- आप आशीर्वाद दें कि मैं अपनी प्रवृत्ति को बदलकर पुनः जल्दी दर्शन लाभ लूं। मैंने आपको इतना अधिक दुःखी किया है कि शायद क्षमा मांगने का अधिकार भी अब मुझे नहीं रहा। बस इतनी ही प्रार्थना है कि मैं कपूत निकला पर आप अपना वात्सल्य बरसाते रहना... कहते-कहते उसकी आँखें बरस पड़ी।

महाराज क्या कहते? उन्होंने अपने पुत्र को कसकर छाती से लगाया। अब तक वे न्यायप्रिय राजा थे पर कब तक अपने वात्सल्य को मर्यादाओं की दीवारों से बांधते। अपने

जाते पुत्र को देखकर उनका हृदय से सागर फूट पड़ा।

महारानी समीप आ गयी। उसका हृदय तो वैसे ही कब से बरसने को आतुर था। महाराजा को यों व्याकुल देखकर पुत्रवियोग की कल्पना ने उसे और अधिक तड़फा दिया। वह भी पुत्र को पकड़कर रोने लगी। बेटा! यह किस अपराध की हमें सजा मिली है? हमने तो अपनी जिन्दगी में सदैव सभी को सुखी करने का ही प्रयत्न किया है। कभी भूल से भी चींटी तक को कष्ट नहीं दिया है। पर इस भव का ही हम जान सकते हैं जन्मांतर का कहाँ जान पाते हैं? जरूर हमने किसी न किसी का वियोग करवाया होगा, तभी तो आज इतना भयानक कष्ट हमारे सुखी जीवन को तहस-नहस कर रहा है।

युवराज ने मां के कदमों में झुकते हुए कहा- मां! मैं आपका भयंकर अपराधी हूँ। आपकी ममता पर आज तक मैंने मात्र अपने आचरण से पत्थर ही मारे हैं। जन्म से आज तक आपको अपनी स्वच्छंदता और उद्दंडता से आहत ही किया है। आज आपका यह कपूत सारे अपराधों की क्षमा मांगते हुए आशीर्वाद चाहता है कि अपनी सभी दुर्बलताओं को समाप्त करके आपका सपूत बनकर जल्दी आपके दर्शन करूँ।

मां ने सुबकते हुए कहा- बेटा! तेरे सुख और कल्याण के लिये युवरानी और राजकुमारी ने राजवैभव को ठोकर मारी है। तूं इनके त्याग और बलिदान को कभी मत भूलना। त्याग और समर्पण सदा-सदा पूजनीय है। इनका कभी मजाक मत उड़ाना। साथ ही सोते और उठते नवकार महामंत्र का अवश्य स्मरण करना। धर्म दु:खी का आधार बनता है तो सुख पचाने की ताकात भी देता है। तेरे हृदय में अगर मां और पिताजी के प्रति सामान्य प्रेम भी हो तो नवकार को अपना आधार बनाना और बहिन एवं पत्नी का ध्यान रखना। इन्हें किसी भी प्रकार की पीड़ा मत देना।

युवराज ने पुन: मां की चरणरज लेते हुए कहा- मां मैं आपकी दोनों ही सीख सदा याद रखूंगा। नवकार महामंत्र को अपने हृदय में रखूंगा और युवरानी एवं बहिन को कभी कष्ट नहीं होने दूंगा।

युवराज ने नगरसेठ, महामंत्री एवं राज्याधिकारियों के आशीर्वाद लेते हुए सभी नागरिकों का अभिवादन किया व जाने के लिये कदम उठाया और तभी उसके कानों में एक चीख की आवाज आयी। उसने मुड़कर देखा- मां गश खाकर गिर पड़ी थी और पिताजी उन्हें संभाल रहे थे।

(क्रमश:)

नवनिर्मित तीर्थों व दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिये

श्री विक्रमपुर (राज.)

द्वितीय दादा गुरूदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (हाल में बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शन पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के अलग उपाश्रय तथा अतिथिगृह जिसमें एअरकंडीशनर व फर्नीचरयुक्त कमरे, डोरमेट्री की सुविधा प्राप्त है तथा यह फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर, फलोदी, बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

Administrotor
Shri Dharmendra Khajanchi
Bikaner (Raj.) Mo.: 9413211739

मुनीम श्री प्रशान्त शर्मा, श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305 (जि. बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635, 9001426345-पेढ़ी

श्री खेतासर (राज.)

चतुर्थ दादागुरूदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्म स्थली खेतासर में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय तथा चतुर्थ गुरूदेव की दादाबाड़ी के दर्शन-वंदन व पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के उपाश्रय तथा अतिथिगृह फर्निचरयुक्त कमरे की सुविधा प्राप्त है। यहाँ भोजनशाला की सुविधा है मगर हर रोज भोजनशाला चालू नहीं है। यहाँ पधारने के लिये जोधपुर, ओसिया, तिंवरी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान ओसियां तीर्थ से 10 किमी. तथा जोधपुर से 65 किमी. पर हैं।

Administrotor श्री बाबूलालजी टाटिया
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 9928217531

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 74250062227

श्री सिद्धपुर पाटन (गुज.)

खरतरगच्छ की जन्मस्थली पाटन नगर में सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष में भवन का निर्माण किया गया है। यहां पर साधु-साध्वी भगवतों के रूकने, स्वाध्याय व पठन-पाठन के लिए सुविधायुक्त भवन है। कृपया जब भी साधु-साध्वी भगवंत पाटन पधारे तो इस सुविधा का उपयोग जरूर करें।

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी, पाटन (गुज.)

Ex. Trustee: **Shri Deepchandji Bafna**
Ahmedabad (Guj.) Mo. 9825006235

श्री राकेश भाई मो. 9824724027

बोधप्रद कथा

समस्या का समाधान

प्रस्तुति : गौतम बी. संकलेचा

एक दस वर्ष का लड़का रोज अपने पिता के साथ पास की पहाड़ी पर सैर को जाता था।

एक दिन लड़के ने कहा- "पिताजी चलिए आज हम दौड़ लगाते हैं, जो पहले चोटी पे लगी उस झंडी को छू लेगा वो रेस जीत जाएगा!"

पिताजी तैयार हो गए।

दूरी काफी थी, दोनों ने धीरे-धीरे दौड़ना शुरू किया।

कुछ देर दौड़ने के बाद पिताजी अचानक ही रुक गए।

"क्या हुआ पापा, आप अचानक रुक क्यों गए, आपने अभी से हार मान ली क्या?" लड़का मुस्कुराते हुए बोला।

"नहीं-नहीं, मेरे जूते में कुछ कंकड़ पड़ गए हैं, बस उन्हीं को निकालने के लिए रुका हूँ।" पिताजी बोले।

लड़का बोला- "अरे, कंकड़ तो मेरे भी जूतों में पड़े हैं, पर अगर मैं रुक गया तो रेस हार जाऊँगा।" और ये कहता हुआ वह तेजी से आगे भागा।

पिताजी भी कंकड़ निकाल कर आगे बढे, लड़का बहुत आगे निकल चुका था, पर अब उसे पाँव में दर्द का एहसास हो रहा था, और उसकी गति भी घटती जा रही थी। धीरे-धीरे पिताजी भी उसके करीब आने लगे थे।

लड़के के पैरों में तकलीफ देख पिताजी पीछे से चिल्लाये- "क्यों नहीं तुम भी अपने कंकड़ निकाल लेते हो?"

"मेरे पास इसके लिए टाइम नहीं है!" लड़का बोला और दौड़ता रहा।

कुछ ही देर में पिताजी उससे आगे निकल गए।

चुभते कंकडों की वजह से लड़के की तकलीफ बहुत बढ़ चुकी थी और अब उससे चला नहीं जा रहा था, वह रुकते-रुकते चीखा- "पापा, अब मैं और नहीं दौड़ सकता!"

पिताजी जल्दी से दौड़कर वापस आये और अपने बेटे के जूते खोले, देखा तो पाँव से खून निकल रहा था।

वे झटपट उसे घर ले गए और मरहम-पट्टी की।

जब दर्द कुछ कम हो गया तो उन्होंने समझाया- "बेटे! मैंने आपसे कहा था ना पहले अपने कंकडों को निकाल लो फिर दौड़ो।"

"मैंने सोचा मैं रुकुंगा तो रेस हार जाऊँगा!" बेटा बोला।

"ऐसा नहीं है बेटा, अगर हमारी लाइफ में कोई प्रॉब्लम आती है तो हमें उसे ये कहकर टालना नहीं चाहिए कि अभी हमारे पास समय नहीं है। दरअसल होता क्या है, जब हम किसी समस्या को अनदेखी करते हैं तो वो धीरे-धीरे और बड़ी होती जाती है और अंततः हमें जितना नुकसान पहुंचा सकती थी उससे कहीं अधिक नुक्सान पहुंचा देती है। तुम्हें पत्थर निकालने में मुश्किल से एक मिनट का समय लगता पर अब उस एक मिनट के बदले तुम्हें एक हफ्ते तक दर्द सहना होगा।" पिताजी ने अपनी बात पूरी की।

दोस्तों हमारा जीवन ऐसी तमाम कंकडों से भरा हुआ है। शुरू में ये समस्याएं छोटी जान पड़ती है और हम इन पर बात करने या इनका समाधान खोजने से बचते हैं, पर धीरे-धीरे इनका रूप बड़ा हो जाता है।

समस्याओं को तभी पकडिये जब वो छोटी हैं। वर्ना देरी करने पर वे उन कंकडों की तरह आपका भी खून बहा सकती हैं..!!

६१ वां जन्म दिवस मनाया

अहमदाबाद 27 मार्च। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज का 61वां जन्मदिवस अहमदाबाद में फाल्गुन सुदि चतुर्दशी को मनाया गया। समारोह का लाभ मुमुक्षु महावीर व मुस्कान बोहरा के मामाजी बिशाला निवासी श्रीमती शांतिदेवी मोहनलालजी बोथरा परिवार ने लिया। उनके घर से भव्य शोभायात्रा निकाली गई जो शाहीबाग के विभिन्न क्षेत्रों से होती हुई ओसवाल भवन पहुंची।

संगीत सम्राट नरेंद्र वाणीगोता ने अपने चिरपरिचित अंदाज में गुरुभक्ति गीतों से माहौल को भक्तिमय बनाया। इस अवसर पर पूज्यश्री ने अपने जीवन के संस्मरण सुनाए। पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी महाराज के उपकारों का वर्णन किया। पूजनीया माताजी महाराज के अनहद उपकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। संचालन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने पूज्यश्री के जन्मदिवस के निमित्त आराधना करने पर जोर दिया।

इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म., पूज्या प्रवर्तनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी सौम्यगुणाश्रीजी म., पू. साध्वी श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म. ने अपने भावों को अभिव्यक्त करते हुए पूज्यश्री के गुणों का वर्णन किया। मुमुक्षु महावीर बोहरा मुमुक्षु श्रद्धा लूंकड़ व सुश्री स्नेहा बोथरा ने पूज्यश्री की अभिनंदना की।

बोथरा परिवार की ओर से मुमुक्षु अमित बाफना, महावीर बोहरा, अनुराग भंसाली, सुश्री नीलिमा भंसाली, सुश्री रंजना कोचर, सुश्री डिंपल श्रीश्रीमाल, सुश्री मुस्कान बोहरा इन सभी दीक्षार्थियों का भावभीना अभिनंदन किया गया। अंत में बोथरा परिवार व मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री का भव्य वधामना, गुरु पूजन किया गया तथा कामली ओढाई गई।

मां एनिमल फाउंडेशन भवन का उद्घाटन

गांधीनगर 25 मार्च। मां एनिमल फाउंडेशन के अंतर्गत पशु पक्षी सेवा केंद्र गांधीनगर का उद्घाटन पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा की पावन निश्रा में दिनांक 25 मार्च 2021 को संपन्न हुआ। संचालक ट्रस्टी राजेन्द्रजी बोथरा ने बताया कि पूरे अहमदाबाद में एकमात्र ऐसी पहली संस्था है जो सातों दिन, 24 घंटे काम करती है। शहर में कहीं पर भी पशु-पक्षी व्याधि ग्रस्त हो उन्हें एंबुलेंस द्वारा लाकर चिकित्सा इस संस्था द्वारा कराई जाती है। पूज्यश्री ने जीव दया के कार्य की अनुमोदना की। इस अवसर पर शहर के गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

गोशाला में योगदान

खैरागढ 15 मार्च। पूज्य खरतरगच्छाधिपति अवंति तीर्थोद्धारक गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा के 62वें जन्मदिवस पर सेवा दिवस के रूप में पूरे भारत वर्ष में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद द्वारा जीवदया दिवस के रूप में मनाया गया। उसी कड़ी में श्रीमती चुक्की बाई चंदनमलजी माणकचंदजी सुराना रायपुर की पावन स्मृति में श्री प्रकाशचंदजी अशोकजी राजेन्द्रजी धीरजजी वीरेंद्रजी एवं विक्रमजी सुराना परिवार ने आचार्यश्री के दीर्घायु जीवन की कामना के साथ मनोहर गौशाला में 15 दिवस के सम्पूर्ण चारे का लाभ लिया। सुराना परिवार रायपुर ने पूर्व में मनोहर गौशाला में आधा एकड़ भूमि का लाभ भी लिया है।

केयुप अहमदाबाद द्वारा मुमुक्षु अभिनंदन

अहमदाबाद 28 मार्च। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा एवं पूज्या प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में अहमदाबाद केयुप एवं केएमपी द्वारा मुमुक्षुओं के अभिनंदन का भव्य कार्यक्रम दिनांक 28 मार्च 2021 को आयोजित किया गया।

सभी मुमुक्षुओं कार्यकर्ताओं के साथ भव्य शोभायात्रा द्वारा ओसवाल भवन पहुंचे। बहुमान सभा में मुमुक्षुओं की एंट्री भव्यता के साथ कराई गई। विभिन्न स्वागत द्वार एवं रंगोली द्वारा सजावट की गई। इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए गच्छाधिपतिश्री ने कहा- बहुमान का विधान कर्तव्य के साथ जुड़ा है। कर्तव्य बोध अनिवार्य है। साधु-साध्वियों के वेयावच्च-पठन-पाठन आदि में सहयोग के कर्तव्य के प्रति सभी को पूर्ण रूप से जागरूक होना है।

केयुप केएमपी ज्ञान वाटिका की ओर से मुमुक्षुओं का राजशाही अभिनंदन-बहुमान किया गया। संघवी तेजराजजी गुलेछा, संघवी विजयराजजी डोसी, संघवी वंसराजजी भंसाली, पं. श्री डॉ. जितेन्द्र भाई बी. शाह, संघवी अशोककुमारजी भंसाली, केयुप अध्यक्ष सुरेश लूनिया, संघवी भंवरलालजी मंडोवरा, चर्चित चोपड़ा, खरतरगच्छ महिला परिषद, बालिका परिषद ने अपने भाव व्यक्त किए। मुमुक्षु राजेश धोका, अमित बाफना, शुभम सिंघवी, महावीर बोहरा, अनुराग भंसाली तथा मुमुक्षु सुश्री नीलिमा भंसाली, सुश्री रंजना कोचर, सुश्री भावना व विनीता संखलेचा, सुश्री डिंपल श्रीश्रीमाल, सुश्री सोना मालू, सुश्री मुस्कान बोहरा; इन 12 मुमुक्षुओं का आगमन हुआ। सभी का भावभीना बहुमान किया गया। सभी ने बहुत ही भाव-प्रवण शब्दों में अपने अंतर के भाव व्यक्त किए। संगीत सम्राट श्री नरेंद्रजी वाणीगोता व गौरव मालू ने वातावरण को वैराग्यमय बनाया।

समारोह के बाद केयुप अहमदाबाद द्वारा स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया।

-भेरू भाई लूणिया

पार्श्वनाथ जिनालय की सप्तम वर्षगांठ संपन्न

बाड़मेर 18 मार्च। श्री पार्श्वनाथ जिनालय कल्याणपुरा की सप्तम वर्षगांठ पूज्य मुनि श्री सुमतिचन्द्रसागरजी म. व शीतलचन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा की निश्रा में हर्षोल्लास मनाई गई। वर्षगांठ के अवसर पर मन्दिर में अठारह अभिषेक महापूजन एवं सत्तरभेदी पूजा का आयोजन हुआ। विजय मुहूर्त में मन्त्रोचार व जयकारों के साथ कायमी ध्वजा के लाभार्थी परिवार शा. गोरधनमलजी प्रतापमलजी मालोणी रांका सेठिया परिवार धोरीमन्ना-अहमदाबाद-मुम्बई द्वारा झूमते-नाचते जिनालय के शिखर पर ध्वजारोहण किया गया। उसके बाद मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान की आरती व मंगल दीपक किया गया।

कार्यक्रम में अध्यक्ष सम्पतराज बोथरा दिल्ली, बंशीधर सेठिया, रमेश पारख, बाबुलाल सेठिया, धनराज सेठिया, रमेश कुमार सेठिया, विक्रम मेहता, रवि सेठिया, कैलाश संखलेचा, कैलाश धारिवाल, पवन वडेरा, शंकरलाल छाजेड़, बाबुलाल बोहरा, जगदीश मालू आदि सैकड़ों की संख्या श्रद्धालु उपस्थित रहे।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

राजनांदगांव 22 फरवरी। श्रद्धेय पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद केन्द्रीय समिति द्वारा मासिक योजना के अंतर्गत 22 फरवरी को ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें महिला परिषद् शाखाओं के 291 सदस्यों ने सहभागिता निभाई। प्रतियोगिता की प्रायोजक खरतरगच्छ महिला परिषद् राजनांदगाँव शाखा थी। इस प्रतियोगिता के परिणाम गुरुदेव गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के जन्मदिवस के अवसर पर 27 मार्च को घोषित किये गये। नतीजे इस प्रकार रहे।

प्रथम - श्रीमती ममता डुंगरवाल खरियार रोड (उड़ीसा)

द्वितीय - श्रीमती नम्रता फलोदी (राजस्थान)

तृतीय - श्रीमती शालिनी बोथरा बालोतरा (राजस्थान)

इसी क्रम में ऑनलाइन प्रतियोगिता की सफलता के पश्चात मासिक योजना के अंतर्गत 13 मार्च तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी की पुण्यतिथि एवं 27 मार्च खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के जन्मदिवस के अवसर पर दोनों ही आचार्य श्री के जीवन चरित्र पर आधारित 'वंदे कुशल मणि गुरुवरम्' ऑफलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सभी स्थानीय शाखाओं में आयोजित की गई। सभी शाखाओं ने स्थानीय स्तर पर क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतियोगियों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया। इन सभी शाखाओं में सर्वाधिक 85 अंक लेकर जोधपुर शाखा की श्रीमती मंजुजी छाजेड विजेता रही। जिन्हें सम्मानित किया जायेगा।

सेतरावा में शत्रुंजय की भाव यात्रा

सेतरावा 26 मार्च। पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी संघमित्राश्रीजी म. साध्वी अमिझराश्रीजी म. साध्वी मेरुशिलाश्रीजी म. की निश्रा में सेतरावा में शत्रुंजय की भावयात्रा की गई।

मंदिर में पूजा अर्चना के बाद शोभायात्रा दादाबाड़ी तक निकाली गई। इसमें जैन समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

ओसवाल समाज भवन में शत्रुंजय तीर्थ की महिमा का वर्णन किया गया तथा प्रवचन हुआ।

इस धार्मिक आयोजन में सेतरावा सहित आगोलाई, बालेसर, सोमेसर, सोलंकियातला, सुवालिया गांव से लोगों ने भाग लिया, जिसका सेतरावा जैन संघ द्वारा स्वागत किया गया।

इस आयोजन के दौरान सेतरावा सरपंच गोपाल सिंह राठौड़ व नवचयनित सीए कुशल लोढ़ा का भी अभिनंदन किया गया।

श्री अवंति तीर्थ में चुनाव संपन्न

उज्जैन 21 मार्च। उज्जैन स्थित श्री अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक मारवाड़ी समाज ट्रस्ट के चुनाव संपन्न हुए। जिसमें श्री अशोकजी कोठारी, श्री ललितजी बाफना, श्री आशीषजी सुराणा, श्री चंद्रशेखरजी डागा, श्री रमेशचंद्रजी बांठिया, श्री अभयकुमारजी छाजेड, श्री दिलीपजी चोपड़ा, श्री प्रमोदजी ओस्तवाल, श्री रजतजी मेहता को संघ के सदस्यों ने मतदान कर चुनाव में विजयी किया। जहाज मंदिर परिवार की ओर से सभी विजयी उम्मीदवारों को बधाई एवं शुभकामना।

केयुप बीकानेर के चुनाव संपन्न

बीकानेर 21 मार्च। खरतरगच्छ युवा परिषद् बीकानेर शाखा की आम सभा 21 मार्च को सुगनजी महाराज के उपाश्रय में पू. साध्वी श्रद्धानिधिश्रीजी म.सा. की निश्रा में हुई।

आम सभा में नई कार्यकारिणी (२०२१-२०२४) का गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से राजीवजी खजांची को अध्यक्ष, अनिलजी सुराणा को सचिव, प्रमोदजी गुलगुलिया व प्रभातजी नाहटा को उपाध्यक्ष, धर्मेन्द्रजी खजांची को कोषाध्यक्ष, अरिहंतजी नाहटा को संगठन मंत्री, कमलजी सेठिया व अंकितजी गुलगुलिया को सहसचिव, अनिलजी पारख को सहकोषाध्यक्ष, विक्रमजी भुगड़ी को सह संगठन मंत्री और हिमांशुजी सेठिया को प्रचार मंत्री के रूप में चुना गया। इसके साथ ही सलाहकार समिति का भी गठन किया गया है जिसमें मोहितजी धारीवाल, प्रवीणजी लूणिया, मनीषजी नाहटा, पुनेशजी मुशर्रफ, विकासजी नाहटा को मनोनीत किया गया है।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से सभी पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकामना।

गच्छाधिपतिश्री के जन्मोत्सव निमित्त पूरे देश में आयोजन

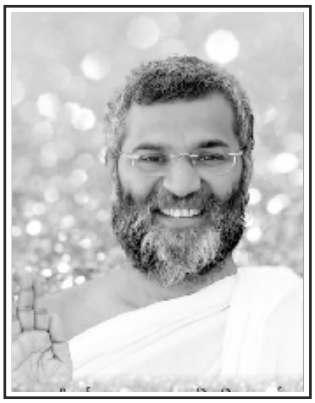

अखिल भारत 26 मार्च। गच्छाधिपतिश्री के 62वें वर्ष में प्रवेशोत्सव निमित्त केयुप की ओर से पूरे देश में कार्यक्रम संपन्न हुए। जिसमें अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् की समस्त शाखाओं ने इस अवसर पर परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा को बधाई देते हुए अभिवंदनाएं समर्पित की।

सभी शाखाओं ने गुरुदेव के जन्म दिवस निमित्त अनुकंपा एवं जीवदया के कार्यक्रम किए। जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

अंकलेश्वर शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

अक्कलकुआ शाखा– प्रतिक्रमण और सामुहिक सामयिक साधना, गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

अजिमगंज संघ – श्री गणधर गौतम गौशाला में चारा, हरी सब्जी, लापसी आदि का वितरण

अहमदाबाद शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण, पशुओं के चिकित्सालय को अनुदान, दीक्षार्थी वरघोड़ा, अभिनन्दन बहुमान

इचलकरंजी शाखा– केयुप और केएमपी द्वारा परमात्मा की स्नात्र पूजा, गौशाला में गायों को गुड़ चारा वितरण

इन्दौर शाखा– गोशाला में हरी घास का वितरण

इरोड शाखा– केयुप और केएमपी द्वारा शाम को गोशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

उदयपुर शाखा– जरुरतमंदों को खाद्यसामग्री का वितरण

ऊटी शाखा– गौशाला में 100 बोरे गायों का बाटा वितरण

कोट्टूर शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण, वृद्धाश्रम में सेवा

कोयंबत्तूर शाखा– वृद्धाश्रम में भोजन वितरण

खरियार रोड शाखा– गौशाला एवं कबूतरखाना में गुङ, रोटी व दाना वितरण

खापर शाखा– सामूहिक सामायिक साधना, गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

खेतिया शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

गोतागुडम शाखा– गौशाला में चुग्गा, हरी घास, गुड, दाना वितरण

गौहाटी शाखा– मूक-बधिर बच्चों के लिए राशि प्रदान

चैन्नई शाखा– चैन्नई कैन्सर इन्स्टीट्यूट में 150 मरीजों को भोजन

चोहटन शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

जयपुर शाखा– गौशाला में जीवदया, चारा वितरण

जैसलमेर शाखा– जैसलमेर से ब्रह्मसर पैदल यात्रा, दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा

जोधपुर शाखा– केयुप और केएमपी द्वारा अपना घर आश्रम में अल्पाहार वितरण कार्यक्रम

टोंक शाखा– गौशाला मे चारा व गुङ का वितरण, सामूहिक सामायिक

डीसा शाखा–प्रभु भक्ति, सामायिक, आर्यंबिल तप आराधना, जीवदया के कार्यक्रम, प्रभु अंग रचना और आरती

तलोदा शाखा– सामुहिक सामयिक साधना

तिरपात्तुर शाखा– सामुहिक सामयिक साधना, तेनमपेट गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

तिरुपुर शाखा– अनुकंपा दिवस, अनाथ आश्रम में सुबह का नाश्ता और दोपहर का खाना

तेजपुर शाखा– दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा, गौशाला में जीवदया

दिल्ली– केयुप और केएमपी द्वारा स्नात्र पूजा (चांदनी चौक व रूपनगर), गौशाला में हरी घास व दाना वितरण

दुर्ग शाखा– गौशाला में चुग्गा, हरी घास, गुड, दाना वितरण

दोंडाईचा शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

धमतरी शाखा– गौशाला में चुग्गा, हरी घास, गुड, दाना वितरण, वृद्धाश्रम में फल और कपड़े वितरण

धूलिया शाखा– गौशाला में पशुओं को हरा घास, चारा, गुड वितरण, जरूरतमंदों को मास्क वितरण

धोरीमन्ना शाखा– सुबह आलम गोशाला में गायों को लापसी, शाम को गोशाला में गुड़ व कबूतरों को दाना

नवसारी शाखा– गौशाला मे गुङ, रोटी, चारा व जीवदया हेतु राशि प्रदान

नीमच शाखा– गोशाला में गायों को हरी घास का वितरण, पक्षियों के पानी के लिए सकोरा का वितरण, मंदिरजी में रविवार को पूजा करने वाले बच्चों को गिफ्ट वितरण

पचपदरा शाखा– गौशाला में चुग्गा, हरी घास, गुड, दाना वितरण

पाली शाखा– कालूजी की बगीची में रक्तदान शिविर

फलोदी शाखा– राशन सामग्री का वितरण

फालना शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड़, दाना वितरण

बाड़मेर शाखा– महावीर स्वामी देरासर के बाहर जरुरतमंद बच्चों को भोजन, कपड़े वितरण, ज्ञान वाटिका के बच्चों के साथ सामूहिक सामायिक, गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

बालोतरा शाखा– दादावाड़ी में गुरुदेव इकतीसा पाठ, गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

बीकानेर शाखा– गोशाला में हरी घास, गुड, दाना और आवश्यक सेवा

बैंगलोर शाखा– 27 मार्च को सामूहिक सामायिक साधना, 28 मार्च को गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

ब्यावर शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

भादरेस शाखा– अनाथ आश्रम में खाना वितरण, गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

भिवंडी ज्ञान वाटिका– सकल संघ के साथ सामूहिक सामायिक

भीलवाड़ा शाखा– अनाथ आश्रम में फल वितरण, गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण, दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा, साधर्मिक वात्सल्य, गुरु प्रसादी, परमात्मा और दादा गुरुदेव की महाआरती, दादा गुरुदेव की भक्तिसंध्या

महासमुंद शाखा– सुबह में स्नात्र पूजा, शाम में दीपक रोशनी

मालेगांव शाखा– गौशाला में लापसी वितरण, अनाथ आश्रम में खाद्य सामग्री का वितरण

मांडवला शाखा–गौशाला में हरी घास गुड का वितरण

मुंगेली शाखा– वृद्धाश्रम में फल वितरण, वृद्धाश्रम में भजन और स्वाध्याय

मुंबई शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

मैसूर शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

रायपुर शाखा– दादा गुरुदेव की पूजा, वक्तव्य:– मणिप्रभसागर गुरु के उपकार, गुरु भक्तों के उद्‌गार, अनुकम्पा दान, सामूहिक सामयिक, जीवदया कार्यक्रम, कुलदीप निगम स्मृति वृद्धाश्रम व बाल गृह माना कैम्प में अनाज व फल वितरण

रिंगनोद शाखा– आंगनवाड़ी केंद्र पर बच्चों को बिस्किट के पैकेट और चॉकलेट वितरण

वड़ोदरा शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड, दाना वितरण

सांचौर शाखा– गौशाला में घास का वितरण

सिकन्दराबाद शाखा– गौशाला में चुग्गा, हरी घास, गुड, दाना वितरण

सूरत पाल शाखा– वृद्धाश्रम में भोजन वितरण, मुकबधिर बच्चों के लिए 61000 रु. की राशि प्रदान

सूरत शहर १ पर्वत पाटिया शाखा– पशुओं को हरा चारा, गुड इत्यादि प्रदान, पशुओं को छुड़ा के गौशाला में भेजना, पक्षीओं को दाना, अनुकंपा कार्यक्रम

सेतरावा शाखा– गोशाला में चुग्गा, हरी घास, गुड, दाना वितरण

हॉस्पेट शाखा– गौशाला में चुग्गा, हरी घास, गुड, दाना वितरण, जरुरतमंदों को खाना और कपड़े वितरण

हुब्बल्ली शाखा– (जेवाइएम सेवा समिति हुबली के साथ) गौशाला में हरी घास, चारा गुड वितरण

हैदराबाद शाखा– गौशाला में हरी घास, गुड़, दाना वितरण

दुर्ग, राजनांदगाँव व खैरागढ़ शाखा– दुर्ग, राजनांदगाँव व खैरागढ़ महिला परिषद् शाखा मनोहर गौशाला खैरागढ़ में गायों को गुङ आदि व 15000 रु. की राशि जीवदया हेतु प्रदान, तीनों शाखाओं का स्नेह मिलन का आयोजित की गई।

–अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्, केन्द्रीय समिति

केयुप सूरत शाखा-१ का स्नेह मिलन सम्मेलन

सूरत 16 मार्च। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद सूरत शाखा–1 का स्नेह संमेलन रॉयल विला फार्म हाउस में संपन्न हुआ। कोरोना काल के बाद युवाओं को मजबूती प्रदान करने एव उनमें एकता के बीज बोने के उद्देश्य से केयुप कार्यकर्ताओं ने स्नेह सम्मेलन में प्रारंभ में अतिथि व पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। महेश मालू व मदन बोहरा द्वारा नवकार मन्त्र एवं केयुप गीतिका का संगान किया।

मुख्य अतिथि वक्ता केयुप के राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास प्रकोष्ठ के सह संयोजक कल्पेशभाई शाह ने युवाओं की एकता की बात करते हुवे कहा कि आपकी एकता से आने वाली पीढ़ी को नई दिशा मिलेगी। हम सभी संरक्षक के तौर पर आप सभी की सेवा के लिए तैयार है।

इस अवसर पर युवाओं को लगभग 90 मिनिट तक लगातार सम्बोधित कर कहा– केयुप यानी राष्ट्रीय स्तर का बहुत बड़ा प्लेटफार्म। जिसकी लगभग 100 शाखाएं एवं 10 हजार कार्यकर्ता जुड़े हुवे है। केयुप सूरत शाखा की तारीफ करते हुवे कहा कि केयुप ने लोकडाउन में मानवसेवा आदि के कार्य सराहे गये है।

अध्यक्ष गौतम कगाऊ ने अपने भाषण में समाज को और युवाओं को समर्पण भावों से जिनशासन की प्रभावना व आगामी कार्यक्रम की तैयारी में जुट जाने को कहा। सचिव गणपत भंसाली ने संचालन कर केयुप के आगामी कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी व आभा ज्ञापित किया। सम्मेलन में लगभग 125 सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम के बाद नाश्ता व भोजन की व्यवस्था केयुप द्वारा की गई।

–अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद सूरत–१ पर्वत पाटिया शाखा

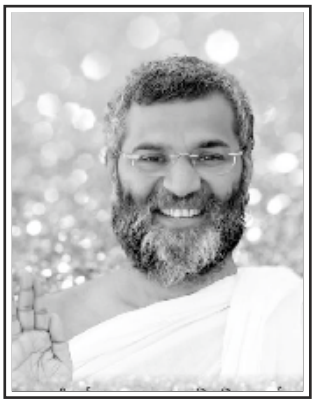

पूज्यश्री का डीसा प्रवास

डीसा 18 मार्च। परम पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. उग्र विहार कर डीसा बाडमेर श्री संघ की विनंती स्वीकार कर ता. 18 मार्च 2021 को डीसा पधारे।

जीवदया प्रेमी श्री भरतभाई कोठारी, श्री विमलचंदजी बोथरा एवं श्री राकेशकुमारजी धारीवाल के घरों में पूज्य गच्छाधिपतिश्री मांगलिक सुनाने पधारे। इन तीनों ही नररत्नों का जालोर के पास एक दुर्घटना में दुखद स्वर्गवास हो गया था।

श्री विमलजी बोथरा के घर पर एकत्रित समाज को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया- जन्म के साथ मृत्यु तय हो जाती है। आयुष्य कर्म के पूर्ण होने पर सभी को विदा होना होता है। इस दुर्घटना में केवल परिवार ने ही नहीं अपितु श्री संघ व हमने अपने अनमोल कोहिनूर तुल्य श्रावकों को खोया है। श्री संघ को व परिवार को अब उनके अधूरे सपनों को पूर्ण करने का पुरुषार्थ करना है। परिवार को थोडी हिम्मत रखनी है। तथा आराधना के द्वारा अपना जीवन सार्थक करना है।

पूज्यश्री ने कहा- तीनों ही सुश्रावक जीवदया से पूर्ण रूप से जुडे हुए थे। जीवदया के लिये उन्होंने अपने प्राणों की भी कभी परवाह नहीं की। और अन्तिम समय में भी जीवदया के ही भाव उनके हृदय में थे। यह सब उनकी सद्गति रूप परिणाम की अभिव्यक्ति है। इस अवसर पर पूज्य आचार्य प्रवर श्री विजयअमितयशसूरीश्वरजी म. भी पधारे थे। उन्होंने भी आराधना की प्रेरणा दी।

डीसा में केयुप का पुनर्गठन

डीसा 18 मार्च। परम पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में युवाओं की बैठक में सर्व सम्मति से विचार विमर्श कर केयुप का पुनर्गठन किया गया।

संरक्षक- श्री शंकरलालजी पारख, श्री संपतराजजी सिंघवी, श्री अशोककुमारजी धारीवाल, श्री दिनेशकुमारजी बोथरा, श्री पुरुषोत्तमजी पारख, श्री संपतराजजी संखलेचा, श्री घेवरचंदजी बोथरा, श्री भूरचंदजी संखलेचा।

अध्यक्ष-श्री अरविन्दकुमारजी सेठिया सीए, वरिष्ठ उपाध्यक्ष- श्री राजेशकुमारजी बोहरा, उपाध्यक्ष- डॉ. श्री विपिनजी छाजेड, सचिव- श्री अरविन्दकुमारजी बोहरा, सहसचिव- श्री अमितकुमारजी पारख एवं श्री घेवरचंदजी सिंघवी, कोषाध्यक्ष- श्री रमेशकुमारजी छाजेड, सहकोषाध्यक्ष- श्री महावीरजी संखलेचा, प्रचारमंत्री-श्री संपतराजजी संखलेचा।

सदस्य-श्री दिनेश बोथरा, श्री कपिल धारीवाल, श्री रमेश बोथरा, श्री प्रवीण बोहरा, श्री मांगीलाल वडेरा, श्री अरूण संखलेचा, श्री कार्तिक छाजेड, श्री कुशल संखलेचा व श्री हर्षित सेठिया।

पूज्यश्री ने वासक्षेप करते हुए सभी को जिनशासन के कार्य करने की प्रेरणा दी।

कोटा में चुनाव संपन्न

कोटा 21 मार्च। श्री जैन श्वेताम्बर पेढ़ी कोटा की साधारण सभा में आठ सदस्यों को कार्यकारिणी सदस्य के रूप में निर्वाचित किया गया। श्री रमेश विरोलिया, श्री (डॉ) गजेन्द्रसिंह तातेड़, श्री लोकेन्द्र डांगी, श्री संजय चौरड़िया, श्री विपिन लोढ़ा, श्री राजेन्द्र दासोत, श्री मिश्रीमल भंसाली, श्री प्रदीप बरडिया को चुना गया। जहाज मंदिर परिवार की ओर से सभी पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकामना।

आचार्य श्री का अहमदाबाद में प्रवेश

अहमदाबाद 15 मार्च। पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. का आचार्य पदारोहण के बाद प्रथम बार अहमदाबाद नगर में पधारने पर दादा साहेब पगला नवरंगपुरा में भव्य प्रवेश कराया गया।

दिनांक 16 मार्च को पू. ब्रह्मसर तिर्थोद्धारक आचार्यश्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. एवं मुनि नयज्ञसागरजी म.सा. श्री ओढव जैन संघ व बाडमेर जैन मित्र मंडल ओढव की भावभीनी विनंती को स्वीकार कर ओढव पधारे। ओढव में धूमधाम से प्रवेश हुआ। पूज्य आचार्यश्री का हृदय स्पर्शी प्रवचन हुए। श्री बाडमेर जैन मित्र मण्डल ओढव द्वारा अल्पाहार कराया गया।

गौड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर की प्रथम वर्षगांठ संपन्न

बाड़मेर 16 मार्च। लंगेरा रोड़ पर श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ हाला जैन संस्थान द्वारा निर्मित श्री गौड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर व दादावाड़ी की प्रथम वर्षगांठ दि. 16 मार्च को सम्पन्न हुई।

परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से एवं पूज्य मुनि सुमतिचन्द्रसागरजी म.सा. व शीतलचन्द्रसागरजी म.सा. की निश्रा में अठारह अभिषेक, ध्वजा के लाभार्थी परिवारों के निवास स्थान से गाजे-बाजे सहित शोभायात्रा, सतरह भेदी पूजा, दोपहर 12:39 बजे विजय मुहूर्त में शिखर पर लाभार्थी परिवारों द्वारा मन्त्रोच्चार के साथ ध्वजारोहण किया गया। मूलनायक गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान की मुख्य ध्वजा श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलाल बोहरा हालावाला, गौतम स्वामी की ध्वजा रविन्द्र कुमार गोरधनदास रतनपुरा परिवार, दादा गुरुदेव की ध्वजा श्रीमती लूणीदेवी नेमीचन्द संखलेचा परिवार सिंयाणी वाले हस्ते गौतम संखलेचा भिवण्डी की ओर से चढाई गई।

वर्षगांठ के उपलक्ष में जिन मन्दिर को रंगीन रोशनी व फूलों द्वारा सजाया गया। वर्षगांठ कार्यक्रम में ब्यावर, पाली, अहमदाबाद, सूरत, भिवण्डी, इरोड़, त्रिपुर, वाराणसी, फालना सहित आस-पास के क्षेत्रों गुरुभक्तों व हालावाला परिवारों ने भाग लिया।

-कपिल मालू

कन्याकुमारी में वर्षगांठ संपन्न

कन्याकुमारी 23 मार्च। कन्याकुमारी में श्री महावीरस्वामी जैन मंदिर एवं दादाबाडी का छठा वर्षगांठ ध्वजारोहण समारोह मनाया गया। दिनांक २३-३-२०२१ को प्रातः भक्तामर जाप, स्नात्र पूजा, सतरह भेदी पूजा के साथ ध्वजारोहण किया गया। मंदिरजी पर संघवी पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा बेंगलूरु, दादाबाडी पर श्री बबलासा गुलेच्छा तिंडीवनम, गुरु मंदिर पर श्री बगदावरमलजी हरण मदुराई द्वारा ध्वजा चढाई गई। इस अवसर पर अनेक गुरुभक्त उपस्थित थे।

जीवित महोत्सव का आयोजन

अहमदाबाद 27 मार्च। परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी भगवंत की निश्रा में मूल बिशाला वर्तमान अहमदाबाद निवासी श्रीमती शांतिदेवी मोहनलालजी बोथरा का जीवित महोत्सव आयोजित किया गया। त्रिदिवसीय आयोजन में प्रथम दिन दि. 25 मार्च 2021 को श्री सिद्धचक्र महापूजन पढाया गया।

द्वितीय दिन दि. 26 मार्च को पंच कल्याणक पूजा पढाई गई। तीसरे दिन दि. 27 मार्च को शोभायात्रा के साथ मातृ-पितृ वंदनावली का आयोजन किया गया।

पुत्र अशोककुमारजी राजेन्द्रकुमारजी ने मातुश्री शांति देवी को अक्षतों से बधाया, पाद प्रक्षालन कर उनसे आशीर्वाद मांगा। संगीतकार श्री नरेन्द्रजी वाणीगोता ने वंदनावली का विधान करवाया।

मुमुक्षुओं का अभिनन्दन

बेंगलूरु 22 मार्च। श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुडी बेंगलूरु में पूज्या माताजी म. साध्वी श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूज्या साध्वी श्री डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में चौहटन निवासी मुमुक्षु श्री रजत सेठिया और मुमुक्षु सुश्री रवीना सेठिया का बहुमान किया गया।

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा द्वारा अभी तक उन्नीस दीक्षाओं का मुहुर्त 6 मई का प्रदान किया गया है जिनकी भागवती दीक्षा शत्रुंजय महातीर्थ में आयोजित की जाएगी। खरतरगच्छ के पिछले एक सौ तीस सालों के इतिहास में प्रथम बार एक साथ इतनी दीक्षाओं का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा है।

दादावाड़ी ट्रस्ट द्वारा मुमुक्षुओं का तिलक, शाल और माला द्वारा सम्मान किया गया। अभिनन्दन समारोह में सामूहिक दीक्षा समिति के चेयरमेन संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, संयोजक संघवी श्री विजयराजजी डोसी, दादावाड़ी ट्रस्ट के महामंत्री संघवी कुशलराज गुलेच्छा, कोषाध्यक्ष रणजीत ललवानी, खरतरगच्छ संघ के महामंत्री अरविंद कोठारी, कांतिलाल गुलेच्छा, तेजराज मालाणी, अनिल भडकतिया, ललित डाकलिया, हेमन्त गुलेच्छा आदि अनेक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अरविन्द कोठारी ने किया।

बालोतरा में वर्षगांठ

बालोतरा 19 मार्च। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ, बालोतरा द्वारा बालोतरा के सुप्रसिद्ध श्री केशरियानाथ जिनमंदिर की तीसरी वर्षगांठ पर ता. 19 मार्च 2021 फाल्गुन शुक्ल 6 को शिखर पर ध्वजा चढाई गई।

इस मंदिर की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में 3 वर्ष पूर्व संपन्न हुई थी। कायमी ध्वजा का लाभ मडली निवासी श्री माणकचंदजी परिवार ने लिया था।

इस अवसर पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् बालोतरा शाखा द्वारा सतरह भेदी पूजा पढाई गई। नौवीं ध्वज पूजन के पश्चात् ध्वजा चढाई गई। इस अवसर पर सकल श्री संघ की विशाल उपस्थिति थी।

ज्ञानवाटिका में चित्रकला प्रतियोगिता

बाड़मेर 14 मार्च। केयुप, केएमपी व केबीपी द्वारा कल्याणपुरा में ज्ञान वाटिका सुचारु रूप से चल रही है। पूज्य मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. की प्रेरणा से संचालित ज्ञान वाटिका में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका परिणाम घोषित किया गया। इस प्रतियोगिता में 3 से 6 वर्ष बच्चों में से प्रथम स्थान श्रेयल कोटडिया, द्वितीय स्थान ईशिता छाजेड़ व तृतीय स्थान नीवी बोथरा ने प्राप्त किया। 8 से 12 वर्ष के बच्चों में प्रथम स्थान प्रियांश, द्वितीय हंसीका व 13 से 18 वर्ष के बच्चों में प्रथम स्थान प्रेरणा बोहरा, द्वितीय स्थान आरती धारीवाल ने प्राप्त किया।

इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को ज्ञान वाटिका द्वारा उपहार देकर अभिनन्दन किया गया। इस प्रतियोगिता के कार्यक्रम में सरिता जैन, राजूल बोथरा, उर्मिला धारीवाल, ममता, बोथरा, खूशबू मेहता सहित केएमपी व केबीपी के सदस्य उपस्थित थी। –कपिल मालू

केयुप बाडमेर ने कराई तीर्थ यात्रा

बाड़मेर 12 मार्च। केयुप वर्षीतप आराधना समिति के तत्वावधान में वर्षीतप आराधकों को बिलाड़ा, अजमेर, मालपुरा व महरौली दादावाड़ी दिल्ली, हस्तिनापुर महातीर्थ आदि तीर्थों की 4 दिवसीय यात्रा संघ को विधायक श्री मेवारामजी जैन ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से केयुप वर्षीतप आराधना समिति की ओर से वर्षीतप तपस्या के निमित दि. 12 मार्च को श्री जिनकांतिसागरसूरि आराधना भवन बाड़मेर से 4 दिवसीय तीर्थ यात्रा संघ बाड़मेर विधायक मेवाराम जैन व जैन समाज के गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति एवं आदिनाथ भगवान के जयकारों के साथ रवाना हुआ।

चार दिवसीय जैन तीर्थ यात्रा संघ 45 आराधकों के साथ बाड़मेर से रवाना होकर जैन तीर्थ दर्शन–वन्दन के क्रम में जैन दादावाड़ी बिलाड़ा, अजमेर, मालपुरा, महरौली दादावाड़ी, हस्तिनापुर महातीर्थ सहित कई जैन तीर्थों की यात्रा कर 14 मार्च को रात्रि में वापस बाड़मेर पहुँचा। विधायक श्री मेवारामजी जैन ने सभी आराधकों को मंगल कामनाएं प्रेषित की तथा संघ के आयोजक केयुप वर्षीतप आराधना समिति की भूरि–भूरि अनुमोदना की तथा बधाई दी। –कपिल मालू

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. ठाणा 4 ने जहाज मंदिर से ता. 9 मार्च 2021 को विहार कर जालोर, फूंगणी, दांतराई होते हुए ता. 15 मार्च को जीरावला तीर्थ पधारे जहाँ तीर्थ की ओर से परम्परानुसार उनका सामैया किया गया। वहाँ से शाम को विहार कर रेवदर, वरमाण तीर्थ, मंडार, पांथावाडा, पालनपुर, मेहसाणा होते हुए ता. 26 मार्च 2021 को अहमदाबाद पधारे।

वहाँ से ता. 1 अप्रेल को विहार कर 10 अप्रेल तक पालीताना पधारने की संभावना है।

संपर्क सूत्र–
पूज्य गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.
द्वारा–श्री बाबुलालजी लूणिया
श्री महावीर ट्रेडिंग कं.,
5. श्रेयस एस्टेट, सोनारिया ब्लॉक के सामने, जनरल हॉस्पीटल रोड, बापुनगर, अहमदाबाद–380021 (गुजरात)
मुकेश प्रजापत– 98251 05823

पूजनीया साध्वी श्री चंद्रकलाश्रीजी म.सा. का कालधर्म

जयपुर 10 मार्च। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ समुदाय के प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. की सुशिष्या पूजनीया साध्वी चंद्रकलाश्रीजी म. का देवलोकगमन 10 मार्च 2021 को हो गया। देवलोकगमन के समाचार मिलते ही जैन समाज में शोक की लहर दौड़ पड़ी। उनकी पार्थिव देह मोहनबाड़ी में श्रावक-श्राविकाओं के दर्शनार्थ रखी गई। उसी दिन सायंकाल 6 बजे आदर्श नगर मोक्षधाम में उनकी देह पंचतत्त्व में विलीन हो गई। इस अवसर पर खरतरगच्छ संघ सहित विभिन्न संघों के पदाधिकारियों ने साध्वीश्री को अश्रुपूरित विदाई दी।

वयोवृद्धा साध्वीश्री की गुणानुवाद सभा का आयोजन मोहनबाड़ी में पूज्या साध्वीश्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री मणिप्रभाश्रीजी म., साध्वी हेमप्रज्ञाश्रीजी म., साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म., साध्वी सुयशाश्रीजी म., साध्वी प्रशमरसाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल ने शोकाभिव्यक्ति देते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। संघ के पदाधिकारियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने उनके जीवन के साथ जुड़ी घटनाओं पर प्रकाश डाला। साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. ने जीवन के अनुभव सुनाए।

इस अवसर पर पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. एवं अन्य आचार्य भगवंत, साधु-साध्वी भगवंतों तथा श्री संघों की ओर से शोकाभिव्यक्ति संदेश प्राप्त हुए। साध्वीश्री चंद्रकलाश्रीजी म. सा. मालपुरा दादाबाड़ी बिराजते थे। लेकिन स्वास्थ्य कारणों से विगत कुछ वर्षों से जयपुर की मोहनबाड़ी में स्थिरवास कर रहे थे। साध्वी सुयशाश्रीजी म. सा. आदि उनकी सेवा में सदैव तत्पर थे।

जीवन परिचय- पूजनीया साध्वी श्री चंद्रकलाश्रीजी म.सा. का जन्म वैशाख शुक्ल 1, संवत् 1991 को मुलतान में नाहटा गौत्रीय सरस्वती बाई-धनीरामजी परिवार में हुआ था। जन्म नाम लाजवंती रखा गया। फाल्गुन शुक्ल 5, संवत् 2009 को छापीहेड़ा में प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. से दीक्षा ग्रहण की थी। समतामय स्वभाव एवं आराधना में सदैव जागरुक रहते थे।

हार्दिक श्रद्धांजलि

शा. रिखबचंदजी मण्डोवरा सिणधरी

सिणधरी निवासी श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट जहाज मन्दिर के पूर्व कोषाध्यक्ष व वर्तमान उपाध्यक्ष तथा श्री नाकोडा तीर्थ के पूर्व ट्रस्टी श्री रिखबचन्दजी धर्माजी मण्डोवरा का दि. 29 मार्च 2021 को सूरत में स्वर्गवास हो गया।

वे संघ के आगेवान सुश्रावक थे। उनके स्वर्गवास से श्री संघ व गच्छ में बहुत बडी क्षति हुई है।

जहाज मंदिर परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति शांति व सद्गति की प्रार्थना करता है। तथा परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता है।

श्री अजय कुमारजी जैन, उदयपुर

श्री अजय कुमार जैन (सुपुत्र डॉ. श्री यू. सी. जैन महामंत्री जहाजमंदिर) का स्वर्गवास उदयपुर में दिनांक 24 मार्च 2021 को हो गया है।

उनके स्वर्गवास से समाज व परिवार की बडी क्षति हुई है। उनकी स्मृति में नवकार महामंत्र का जाप आयोजित किया गया।

जहाज मंदिर ट्रस्ट सादर श्रद्धांजलि अर्पण करता है। तथा परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता है।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर शहर का प्रसिद्ध किराना व्यापारी था। शक्कर, नमक, मिर्ची आदि हर वस्तु उसकी दुकान पर मिलती थी। वह उन लोगों से देशी घी खरीदता था, जिनके घरों में गाय, भैंस पाली जाती थी और वे दूध से दही बनाकर, उसका बिलौना करके मक्खन निकालते थे और उससे शुद्ध घी तैयार करते थे। सस्ते भाव में खरीदना और अपनी कमाई जोड़कर बेचना, उसका व्यापार था।

एक ग्रामीण महिला घी बेचने के लिये उसके पास आई थी। जटाशंकर ने सारा घी खरीद लिया था। उस महिला ने कहा था- पूरा पांच किलो घी है। सेठ जटाशंकर थोडा जल्दी में था। इसलिये उसकी बात पर भरोसा करके उसे 5 किलो के रुपये दे दिये थे।

पांच छह दिनों बाद वही महिला और घी बेचने के लिये आई थी। वह अपनी बात कहे, उससे पहले ही सेठ ने शिकायत की- उस रोज तुमने पांच किलो घी के रुपये लिये थे, जबकि बाद में मैंने अच्छी तरह तोला तब साढ़े चार किलो ही निकला। तुमने मेरे साथ ठगाई की।

महिला भोलेपन से बोली- सेठ! मेरे घर में कोई तोलने के बाट नहीं है। आपकी दुकान से 5 किलो शक्कर लेकर गई थी, उसी शक्कर से घी को तोला था।

सुनकर सेठ मौन होकर अपना मुंह छिपाने लगा। क्योंकि पांच किलो के नाम से उसी ने साढे चार किलो शक्कर उसे पकडाई थी। अब वह क्या जवाब देता!

व्यक्ति स्वयं दूसरों को जब ठगता है, तो अपनी चतुराई पर प्रसन्न होता है। पर जब वह स्वयं किसी और से ठगा जाता है, तब चीखता - चिल्लाता है।

पर सच यह है कि मैं ही मुझे ठगता हूँ। यहाँ ठगने वाला भी मैं ही हूँ और ठगाने वाला भी मैं ही हूँ।

अहमदाबाद में सामैया

अहमदाबाद 25 मार्च। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. अहमदाबाद खरतरगच्छ श्री संघ की विनंती स्वीकार कर दि. 25 मार्च 2021 को दादा साहेब पगलां नवरंगपुरा पधारे। जहां खरतरगच्छ श्री संघ द्वारा भव्य स्वागत सामैया किया गया। पूज्य श्री ने प्रवचन फरमाते हुए आज फाल्गुन तेरस की महिमा बताई तथा जीवन को सकारात्मक दिशा में आगे बढाने की प्रेरणा दी।

पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी महाराज ने तीर्थ स्वरूप इस दादावाडी की महिमा बताते हुए दादा गुरुदेव के उपकारों की व्याख्या की। पू. साध्वी दिव्यांजनाश्रीजी म. ने पूज्य गुरुदेव श्री के गुणों का वर्णन किया। संघवी कुशल जी भंसाली ने भी अपने भाव व्यक्त किये।

हमारे नये संरक्षक

शा. महावीरचंदजी अशोककुमारजी हरकचंदजी चोपडा, अहमदाबाद

जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक आभार...

सादर श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमान् भंवरलालजी हस्तीमलजी कटारिया संघवी

मरुधर पादरु

निधन
04.03.2021
हैदराबाद
उम्र 78 वर्ष

आप परम गुरु भक्त, जीवदया प्रेमी, सरल व्यक्तित्व के धनी थे।
आपकी गुरुदेव श्री के प्रति अटूट आस्था थी।
आप नियमित रुप से हनुमानजी मंदिर में दीपक करने जाते थे।

शा. नेमीचन्द, नरतपराज, राजेशकुमार, सुरेशकुमार
कल्पेश कुमार, प्रतीक, रसीत, सिद्ध, प्रीत, युग
कटारिया संघवी परिवार
पादरु-हैदराबाद-चैन्ने

प्रतीक इलेक्ट्रीकल्स
टूप बाजार, हैदराबाद
9966667006

राजेश असोसीयेट
75, नानीयापा नायकन स्ट्रीट
चैन्ने-600 003
98410 85511

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

श्री सिद्धाचल तीर्थ की पावन धरा पर इतिहास का स्वर्णिम सर्जन

पू. मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. का गणी पदाभिषेक तथा
19 मुमुक्षुओं की दीक्षा का ऐतिहासिक आयोजन

भव्य वरघोड़ा शोभा यात्रा
बुधवार, ता. 5 मई 2021

पद प्रदान व दीक्षा
गुरुवार, ता. 6 मई 2021

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
पूज्य आचार्य प्रवर श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. आदि शतादिक विशाल साधु-साध्वीवृंद

सकल श्री संघ को पधारने का सादर निवेदन है। इस ऐतिहासिक महोत्सव में सहयोगी बनकर पुण्यार्जन का अनुपम अवसर

स्थल : श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, पालीताणा (गुजरात)

रत्न स्तंभ - 2,11,000/-
(पत्रिका में 2 फोटो 7 नाम)

स्वर्ण स्तंभ - 1,11,000/-
(पत्रिका में 1 फोटो 5 नाम)

सम्पर्क सूत्र :
चेयरमेन - संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा मो. 94483 87442
संयोजक - संघवी श्री विजयराजजी डोसी मो. 93437 31869

सुविहित उत्सव आयोजन समिति
अखिल भारतीय जैन श्वे. खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा
श्री मोहनचन्द ढढ्ढा (अध्यक्ष) श्री प्रकाशचन्द सुराणा (व. उपाध्यक्ष)
श्री पदमकुमार टाटिया (महामंत्री) श्री रतनलाल बोहरा (कोषाध्यक्ष)

तत्वावधान एवं निवेदक
श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
श्री तेजराजजी गुलेच्छा (अध्यक्ष) श्री भंवरलालजी छाजेड़ (व. उपाध्यक्ष)
श्री पदमकुमार टाटिया (महामंत्री) श्री दीपचन्द बाफना (कोषाध्यक्ष)

व्यवस्था
अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद (के.यु.प.) ● अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला व बालिका परिषद (के.एम.पी.)
सम्पर्क आवास व्यवस्था हेतु सम्पर्क - श्री बाबुलालजी लुणिया-94260 02186 श्री सुरेश लुणिया-944440 07762

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408